E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

चम्बल संभाग में हुये पुरातात्विक सर्वेक्षणों का ऐतिहासिक अनुशीलन

डॉ. भारती शर्मा

शोधार्थी जीवाजी विश्वविद्यालय

Paper Rcevied date

05/05/2025

Paper date Publishing Date

10/05/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.15483660

IMPACT FACTOR 5.924

चम्बल संभाग से तात्पर्य इसमें शामिल तीन जिलों भिण्ड, मुरैना एवं श्योपुर से है। प्राचीन काल से ही यह क्षेत्र अपनी संस्कृति के लिये प्रसिद्ध है। यही कारण है कि पुरातत्व विभाग की टीम लगातार इस क्षेत्र में नवीन पुरास्थलों को खोजने का कार्य करती रही है। प्रस्तुत शोध का विषय इस क्षेत्र में हुये प्रमुख सर्वेक्षणों पर प्रकाश डालेगा ताकि शोधार्थियों का मार्ग प्रशस्त किया जा सके। चम्बल संभाग में पुरातात्विक सर्वेक्षणों की शुरुआत सर एलेक्जेंडर कनिघंम के द्वारा की गई जो एक दीर्घ अंतराल तक अनवरत जारी रही इस दौरान चम्बल संभाग में अनेक खोजें की गई जिन्होनें चम्बल संभाग के इतिहास को नया आयाम दिया। सर एलेक्जेंडर कनिघंम ने सर्वेक्षण कार्य को जहां विराम दिया उसे पुनः प्रारम्भ करने का श्रेय पुरातत्व विभाग के अधीक्षक एम.वी.गर्दे के द्वारा किया गया। जिनके संरक्षण में 1920 से 1940 तक इस क्षेत्र का सर्वेक्षण किया गया है। गर्दे के लगभग 20 वर्षों के दीर्घ कालांतर में अनेक इतिहासकारों और पुरातत्वविदों ने चम्बल क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण कार्यों को आयाम दिया। चम्बल संभाग के सर्वेक्षणों का वर्ष क्रमानुसार विवरण इस प्रकार है।

मध्यप्रदेश के चम्बल संभाग का पुरातात्विक सर्वेक्षण का शुभारंभ सर एलेक्जेंडर कनिघंम के माध्यम से किया गया था वह सर्वेयर जनरल के रुप में 1861 में आए तद्उपरांत उन्होनें चम्बल और उसके आस–पास के क्षेत्रों का सर्वेक्षण कार्य को प्रारम्भ किया था। इस कार्य को करने का प्रमुख उदेश्य इस क्षेत्र में प्राप्त होने वाली पुरा सम्पदा को एकत्रित करना था जिनमें मुख्य रुप से पुरास्मारकों का अध्ययन तथा प्राचीन प्रतिमाओं की जानकारी एकत्रित करना एंव सिक्कों का गहन अध्ययन को मुख्यतः शामिल किया गया। इसी क्रम में सर एलेक्जेंडर ने इस क्षेत्र के मुरैना जिले का अध्ययन प्रारम्भ किया जिनमें नूराबाद, कुतवार एंव सुहानियां से अनेक महत्वपूर्ण पुरातत्व संबंधित सामग्रियों का संग्रहण किया गया। सर एलेक्जेंडर द्वारा किए गए सर्वेक्षणों के उपरांत किसी अन्य पुरातत्वविद ने इस क्षेत्र में एक दीर्घ समय तक कोई महत्वपूर्ण कार्य नही किया जिसकी व्याख्या की जाए परंन्तु जब एम.वी.गर्दे अधीक्षक के रुप में नियुक्त हुए तब यह क्षेत्र पुनः सर्वेक्षण कार्यो के लिए प्रकाश में आया। गर्दे सन् 1920 से 1940 तक पुरातत्वविद के रुप में इस क्षेत्र से जुडे रहे। गर्दे के द्वारा सन् 1924–25 के मध्य मुरैना जिले में स्थित पुरास्थलों में पढावली, सुहानियां इत्यादि पर चल रहे संरक्षण कार्यों का निरीक्षण किया।

इसके अगले वर्ष सन् 1926–27 में गर्दे के द्वारा मुरैना जिले के पढावली, सुहानियां आदि पुरास्थलों का सर्वेक्षण कार्य किया गया जिसके दौरान सुहानियां पुरास्थल से भगवान विष्णु की पांच मुख और दस मुख वाली प्रतिमाओं की प्राप्ति हुई जिनको संरक्षण की दृष्टि से इसी वर्ष ग्वालियर स्थित संग्रहालय में सुरक्षित रख दिया गया। गर्दे के द्वारा सन् 1928–29 में चम्बल

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

संभाग के भिण्ड जिले का सर्वेक्षण कार्य किया गया जिनमें गोहद, गोरमी एंव पिपाडी से नवीव पुरातत्व सामग्री को संरक्षित करके सूचीवद्ध किया गया। वर्ष 1930–31 में पुनः भिण्ड जिले के सर्वेक्षण का कार्य किया गया जिनमें प्रमुख रुप से किसी नवीन सामग्री की प्राप्ति नही हुई। पुनःवर्ष 1933–34 में भिण्ड जिले का सर्वेक्षण का कार्य हुआ। वर्ष 1935–36 में गर्दे के निर्देशन में अनेक पुरास्थलों पर सर्वेक्षण का कार्य को गति देते हुए चम्बल संभाग के मुरैना जिले के वीरपुर धनैच, ढोनाकोना, बडोखर, वघेर, सतनवाडा आदि स्थलों से प्राप्त हुए अवशेषों को सूचीबद्ध किया गया। इसी क्रम में वर्ष 1940 तक गर्दे नें सर्वेक्षण कार्यों में अपना अहम योगदान प्रदान दिया और इस क्षेत्र के पुरातात्विक विकास में सहयोग किया। एम.वी.गर्दे के पश्चात् पुरातत्व विभाग के अधीक्षक का पद डी.आर.पाटिल को प्रदान किया गया जिन्होनें इस क्षेत्र में पहले से किए गए सर्वेक्षण कार्यों को गति प्रदान की। इन्होनें मुरैना जिले के पुरास्थलों में मुख्य रुप से नरेशर, बटेश्वर एंव पढावली पर प्रमुख रुप से कार्य किया और 800 से 1200 ई. तिथि तक की अनेक स्मृति स्तम्भों को भी खोज निकाला।[1] इसके उपरांत वर्ष 1954–55 में एम.पी. श्रीवास्तव के द्रारा इस क्षेत्र का सर्वेक्षण कार्य किया गया जिसमें प्रमुख रुप से भिण्ड जिले के पुरास्थलों में कैथा, वरेहट, दवोह, सिरसा, मेहरा वुजुर्ग एंव जामुहा आदि स्थलों से लाल और काले मृदभाण्डों के साथ उत्तरी काले मार्जित मृदभाण्डों की प्राप्ति हुई। भिण्ड जिले के बरेठा नामक स्थान से उत्तरी कृष्णमार्जित मृदभाण्डों के अतिरिक्त चित्रित घूसर मृदभाण्डों की प्राप्ति हुई है।[2]

सन् 1958–59 में श्री जे.पी.श्रीवास्तव द्रारा भिण्ड जिले से उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभाण्डों को खोजा गया जो भिण्ड जिले की लहार तहसील से 34 कि.मी में उत्तर दिशा की ओर प्राप्त हुए।[3] सन् 1959–60 में भिण्ड जिले का सर्वेक्षण पुनः श्री जे.पी. श्रीवास्तव के द्रारा किया गया जिनमें इस स्थान से उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभाण्डों की प्राप्ति हुई जो यहां मृदभाण्ड भिण्ड जिले के मौ, जामुहा, भरोली, जामधरा एंव अशोहना से प्राप्त हुए। भिण्ड जिले में स्थित बरेहट से श्री जे.पी.श्रीवास्तव के द्रारा बहुत ही महत्वपूर्ण खोज की गई जिसमें एक मृणमय पट्टिका की प्राप्ति हुई जो कला की दृष्टि से अपना अद्रितीय स्थान रखती थी। जिसमें कोई स्त्री एक वृक्ष के नीचे बहुत ही शांत मुद्रा में बैठी हुई है। मूर्ति शिल्प के आधार पर पुरातत्वविदों ने इस मृणमय पट्टिका को गुप्त शैली का माना है। जिसकी पहचान जे.पी.श्रीवास्तव के द्रारा अशोक वाटिका में बैठी हुई माता सीता से की गई है।[4]

वर्ष 1961–62 में भिण्ड जिले का सर्वेक्षण कार्य फिर से किया गया जिसमें इस स्थान से राम बाबू को चित्रित घूसर पात्रों की प्राप्ति अकोदा नामक स्थान से हुई इसके अतिरिक्त यहां से लाल और काले मृदभाण्डों के साथ उत्तरी काले मृदभाण्डों की प्राप्ति चित्रण सहित हुई। इसी वर्ष भिण्ड जिले में स्थित भारोली गॉव से मध्यकालीन सूर्य मंदिर की प्राप्ति हुई[5] इसके साथ ही इसी वर्ष मुरैना जिले में पाए गए पुरास्थलों से कच्छपघातों के मंदिरों की प्राप्ति भी हुई जिनमें प्रमुख रुप से सुहानियां, मितावली और पडावली के मंदिर मिले। पढावली की गढी से प्राप्त मंदिरों में शैव धर्म और वैष्णव धर्म से जुडी हुई कथाओं के अंकन को देखा जा सकता है । मुरैना जिले के सुहानियां नामक पुरास्थल जहां ककनमठ मंदिर निर्मित है इस स्थान से शैव धर्म से संबंधित प्रतिमाऐं प्रकाश में आयी। यह मंदिर खजुराहो के मंदिरों के समान दिखाई देता है जिसकी लम्बाई और ऊचाई लगभग तीस मीटर के आस–पास है। इसी क्रम में मितावली नामक पुरास्थल से एकोत्तर सौ महादेव मंदिर अथवा चौसठ योगिनी मंदिर ज्ञात होता है जो कला की दृष्टि से प्रतिहार काल का माना जाता है। नरेसर से जिन मंदिरों की प्राप्ति हुई है वे त्रिरथ योजना पर निर्मित है इस मंदिरों में एक सुकनासिका सहित स्पष्ट शिखर अंतराल पाया गया है।[6]

सन् 1962–63 में भिण्ड जिले में जे.पी.श्रीवास्तव के द्रारा सर्वेक्षण का कार्य पुनःप्रारम्भ किया। इस सर्वेक्षण में भिण्ड की अटेर तहसील से कुछ सूक्ष्म जीवाश्मों की प्राप्ति हुई ये जीवाश्म चम्बल नदी की ढीली मृदा की परतों में फंसे हुए थे।[7] सन् 1968–69 के अंतर्गत मुरैना जिले में सर्वेक्षण का कार्य किया गया जिसमें के.पी.नौटियाल के मार्गदर्शन में प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एंव पुरातत्व विभाग, जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर के छात्रों ने ताम्रपाषाण काल के स्थलों की खोज की। इन पुरास्थलों को सांक नदी के दोनों ओर स्थित पाया गया, मुरैना जिले के अंतर्गत आने वाला नूराबाद कस्बा अपने गर्भ में उत्तर पाषाण

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

काल के कुछ उपकारणों की पुष्टि करता है जिनमें मुख्य रुप से पीसने के उपकरण, पत्थर के मनके, एक छोटी कुल्हाडी और मृदभाण्डों की प्राप्ति हुई है जिनका निरीक्षण करने पर यह कुछ मालवा प्रकार के प्रतीत होते है।[8] सन् 1970–71 में मुरैना जिले का पुनः सर्वेक्षण कार्य के.पी.नौटियाल के मार्गदर्शन में हुआ इस सर्वेक्षण कार्य में उनके साथ प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एंव पुरातत्व विभाग, जीवाजी विश्वविधालय ग्वालियर के कुछ छात्र शामिल थे। जिनमें प्रमुख रुप से रमाकांत चतुर्वेदी, डी.एल. राजपूत, राजीव दुबे एंव सूर्यकांत के नाम शामिल है। इसमें आसन नदी के किनारे स्थित कुतवार नामक पुरास्थल का सर्वेक्षण किया गया जो महाभारत कालीन है। पांडवों की माता कुंती राजा कुंतीभोज की पुत्री थी। जिसका सम्बंध कुंतवार से जोडा जाता है। इस पुरास्थल से उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड एंव लाल तथा काले चित्रित घूसर मृदभाण्ड प्राप्त हुए। इसके कुछ अंतराल बाद इस पुरास्थल से मृणमय प्रतिमाओं सहित चित्रित घूसर पात्रों की प्राप्ति हुई। इनके साथ ही मृदा के मनके तथा ताम्र निर्मित कडे, और कारनेलियन के मनके की प्राप्ति हुई।[9]

सन् 1972–73 में चम्बल क्षेत्र का सर्वेक्षण सूर्यकांत श्रीवास्तव के द्रारा चम्बल नदी के तट पर किया गया जिनमें बहुत से पुरास्थलों की खोज हुई। जिनमें पाए गए कुछ स्थल प्रागैतिहासिक, आधैतिहासिक तथा ऐतिहसिक काल से संबंध रखते थे। जिनकी प्राप्ति वर्तमान समय में चम्बल संभाग के श्योपुर जिले से हुई जो कभी मुरैना जिले का भाग हुआ करता था । इस पुरास्थल की प्राप्ति खिरखिरी या बिलौनी नामक ग्राम से हुई जो चम्बल नदी के तट पर बसा हुआ है इसके साथ ही कुछ पुरास्थलों की प्राप्ति चम्बल नदी के दाहिने तट पर होती है जो राजस्थान से जुडे पाए गए है इसके साथ सेवापुर तथा जूनी नाम के पुरास्थल प्राप्त हुए है। इन पुरास्थलों से निम्न पुरापाषाणकालीन घिसे हुए कुछ स्क्रेपर तथा हेंडेक्सों की प्राप्ति हुई। निम्न पुरापाषाकाल के अतिरिक्त मध्यपाषाणकालीन उपकरणों की प्राप्ति भी इस पुरास्थल से हुई जिनमें मुख्य रुप से प्वाइंट एंव स्क्रेपर शामिल है। बिलौनी ग्राम के बंजारीघाट से माइक्रोलिथ्य की खोज हुई जिन्हे छोटे उपकरण भी कहा जाता है। चम्बल नदी के तट से लगभग 7–8 कि.मी की दूरी पर दो कि.मी. के व्यास में फैला हुआ पुरास्थल जो ऊंचाखेडा के नाम से जाना जाता है प्राप्त हुआ। यह पुरास्थल ऐतिहासिक काल की जानकारी प्रदान करता है। इस पुरास्थल से काले तथा लाल रंग के मृदभाण्डों की प्राप्ति हुई जो मालवा मृदभाण्डों से समानता रखते है। श्योपुर जिले से कुछ ऐतिहासिक स्थलों की खोज भी हुई जिनमें नमुना की ठौर, धन्ता, खेडा, खेडा लडुका, खेडा रामेश्वर, खेडा नगली, खेडा काकेर एंव खेडा धंतरदा आदि प्रमुख है। खेडा सिरौदा, खेडा श्रीरामपुर एंव खेडा बैरोडा आदि ऐतिहासिक कालीन पुरास्थल नदी के दायें तट पर स्थित है। जबकि खेडा रोदावड एंव खेडा मुंदरा पुरास्थलों की प्राप्ति राजस्थान राज्य के अंतर्गत होती है।[10] सन् 1978–79 में कृष्णपाल सिंह भदौरिया ने भिण्ड जिले का सर्वेक्षण कार्य किया। इन्होनें भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के निर्देशन में योजना बनायी जिसमें गॉव से गॉव सर्वेक्षण करके उन पुरास्थलों को खोजा गया जिन स्थलों से पुरासामग्रीयों की प्राप्ति हुई।[11] भिण्ड जिले से प्राप्त पुरास्थलों में सपर, सर्कया, सेनेहरा, पुर, रामकोट, फूंफकला, मिसा, बिजौरा, बरही, ऐंती, कनबर, बरही, पराया, बरेडी, जाबई, बडोखर, परसोना, जरी, बोरेश्वर, कवोंगरा, कोसंद, पचोखरा आदि प्रमुख रुप से शामिल है।[12] सन् 1979–80 में भिण्ड जिले में पुनः सर्वेक्षण कार्य भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के द्रारा कराया गया इस वर्ष किए गए सर्वेक्षण में गुप्तकाल के कुछ फलकों के अतिरिक्त लाल एंव काले मृदभाण्डों सहित चित्रित घूसर मृदभाण्ड और उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड प्राप्त हुए। भिण्ड जिले के बोरेश्वर नामक स्थान से कच्छपघातों तथा प्रतिहारों की कुछ मूर्तियों की प्राप्ति हुई यह मूर्तियां बडेरी, कचोंगरा एंव कनवर नामक स्थलों से प्राप्त हुई है। मूर्तियों के अतिरिक्त इन पुरास्थलों से कुछ लेखयुक्त सती स्तंभों की प्राप्ति भी हुई है जो लगभग 14वी–15वी शताब्दी के है।[13] इसी वर्ष मुरैना जिला का सर्वेक्षण कार्य कृष्णपाल सिंह भदौरिया के द्रारा किया गया। इस जिले से जो पुरास्थल प्रकाश में आए उनमें तुतवास, रचेड, थारा, माई, सिकरोदी, जोताई, चपक, ऐसाहा, सिहोनिया, धरमगड, सेंथरा, आरोन, सेंथरा बधाई, आरोन, सांगोली, बवडीपुरा, रुपहेटी, भकरौली, रौरिया, भिरौसा, रितवारी, भानपुरा, रचेड, बुधारा, पुरावासकलां, डोंडरी, उरेट, दुर्गादास की गढी, नूनहेरा, खेरा, महदौरा, कुरैठा, महुआ, जोताई, किचुला, किरांच, कटेलहा का पुरा, कुकथरी, कंदकौली, कोंथरकलां आदि प्रमुख है। इन पुरास्थलों में से ताम्रपाषाण काल के मृदभाण्डों की प्राप्ति तुतवास और सिहोनिया

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

नामक पुरास्थलों से हुई जो आसन तथा कुंवारी नदी पर स्थित है। इन पुरास्थलों से कायथा प्रकार के मृदभाण्डों की प्राप्ति हुई।[14]

सन् 1980–81 में मुरैना जिले का पुनः सर्वेक्षण श्री कृष्णपाल सिंह भदौरिया के संरक्षण में प्रारम्भ हुआ इनके द्वारा 60 गॉवों का सर्वेक्षण ग्राम से ग्राम सर्वेक्षण योजना के तहत किया गया। जिनमें भर्व, सिंहरना, सुसनी, जावरा, सिरमति, बारी, अट्टा, देवरी, मुडैला, धिरधान, पैथा, अरदोनी, बागचीनी, बटगॉव, उमैदगढ बासी, समंतखेडा, गुलैठा, बरौली, सुहानियॉ, बानी, अम्बाह, रानीपुरा एंव रौर आदि स्थल प्रकाश में आये।[15] सन् 1982–83 में मुरैना जिले में गिलौलीखेडा नामक पुरास्थल पर रहमान अली, सुधाकर मिश्रा, आर.के.शर्मा, एच.आर.पांडे, एस.के.द्विवेदी के द्वारा उत्खन्न का कार्य पूर्ण कराया गया।[16] सन् 1984–85 में मुरैना जिले के सर्वेक्षण का कार्य भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के माध्यम से गॉव से गॉव सर्वेक्षण परियोजना के अंतर्गत कराया गया इसमें मुख्य भूमिका ए.के.पांडे के द्वारा निभाई गई। इस कार्य के माध्यम से अनेक पुरातात्विक महत्व वाले नवीन स्थलों की प्राप्ति हुई है जिसमें[17] बंधा, थारा, खनेता, ककरधा, बामौर कलां, अतारसुम, चिरातनी, डोंगरपुर, पमाया, पालपुर, सरायछोला, करुआ आदि प्रमुख है।[18]

सन् 1985–86 में मुरैना जिले के सर्वेक्षण का कार्य प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एंव पुरातत्व विभाग जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर द्वारा किया गया जिसमें मुरैना में स्थित लिखी छांज नामक पुरास्थल की खोज पुरातत्व विभाग के द्वारा की गई।[19] सन् 1995–96 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के आर.सी.अग्रवाल के नेतृत्व में मुरैना के कुतवार नामक पुरास्थल पर उत्खन्न का कार्य कराया गया[20] एंव इसी वर्ष में मुरैना के पढावली, बटेश्वर नामक पुरास्थलों के सर्वेक्षण का कार्य किया गया। अगले ही वर्ष सन् 1996–97 में मुरैना जिले के कुतवार नामक पुरास्थल से उत्खनन का कार्य प्रारम्भ किया गया। इस स्थल से अनेक प्रकार की पुरा सामग्रियों की प्राप्ति हुई। इसके साथ ही महाराजाधिराज बलिश्ता सिंह से संबंधित शिलालेख जिसकी तिथि विक्रम संवत 1833 अंकित है जो बजरंगगढ के किले की दीवार से प्राप्त हुआ।[21] सन् 1997–98 में मुरैना जिले का सर्वेक्षण कार्य पुनः प्रारम्भ किया गया जिसमें कुतवार नामक पुरास्थल पर सर्वेक्षण के.के.राय, नारायण व्यास, मेंनुअल जोसफ, नीतिन श्रीवास्तव आदि द्वारा किया गया।[22] इसके साथ ही वर्ष 2005 में प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एंव पुरातत्व विभाग, जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर के प्रमुख आर.ए.शर्मा और उनके शोधछात्रों योगेश यादव, संजीव बित्थरिया, घनश्याम उचाडिया एंव जितेंद्र सिंह कौरव द्वारा के द्वारा भिण्ड जिले की लहार तहसील का सर्वेक्षण कार्य किया गया। और महत्वपूर्ण पुरासामग्री प्राप्त की। इस प्रकार इस क्षेत्र के इतिहास को समक्षने के लिये लगातार सर्वेक्षण और उत्खनन के कार्य किये जा रहे है ताकि चंबल क्षेत्र के इतिहास को जनमानस तक पहुंचाया जा सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आई.ए.आर.1954–55 पृष्ठ क्रमांक 27

2. आई.ए.आर.1958–59 पृष्ठ क्रमांक 26

3. आई.ए.आर.1957–58 पृष्ठ क्रमांक 67

4. आई.ए.आर.1959–60 पृष्ठ क्रमांक 69

5. आई.ए.आर.1961–62 पृष्ठ क्रमांक 98

6. आई.ए.आर.1961–62 पृष्ठ क्रमांक 112

7. आई.ए.आर.1962–63 पृष्ठ क्रमांक 68

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

8. आई.ए.आर.1968–69 पृष्ठ क्रमांक 12

9. आई.ए.आर.1970–71 पृष्ठ क्रमांक 20

10. आई.ए.आर.1972–73 पृष्ठ क्रमांक 17

11. आई.ए.आर.1978–79 पृष्ठ क्रमांक 9–10

12. यादव योगेश, उत्तरी मध्यप्रदेश का भौतिक तथा सांस्कृतिक जीवन प्रारम्भ से बारहवी शती ई.तक अप्रकाशित शोध प्रबंध 2010 पृष्ठ संख्या 118–120

13. आई.ए.आर.1979–80 पृष्ठ क्रमांक 41

14.यादव योगेश, वही पूर्वोक्त पृष्ठ संख्या 120–123

15. गिडियन डॉ.नवीन, दुबे डॉ.अनिल मुरैना का पुरातत्व (प्रागौतिहासिक काल से 1300 ई.तक) सागर प्रकाशन, जवाहरगंज,सागर (म.प्र.) पृष्ठ क्रमांक 18–19

16.आई.ए.आर.1983–84 पृष्ठ क्रमांक 51–52

17.आई.ए.आर.1983–84 पृष्ठ क्रमांक 46–47

18. यादव योगेश, वही पूर्वोक्त पृष्ठ संख्या 125–126

19. आई.ए.आर.1983–84 पृष्ठ क्रमांक 48–49

20. आई.ए.आर.1995–96 पृष्ठ क्रमांक 47,128–129

21. आई.ए.आर.1996–97 पृष्ठ क्रमांक 181

22. आई.ए.आर.1996–97 पृष्ठ क्रमांक 99